माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का स्मार्ट क्लास शिक्षण तथा परम्परागत कक्षा शिक्षण से शैक्षिक उपलब्धि पर पडने वाले प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन

जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं

के शिक्षा अधिस्नातक (एम.एड.)

उपाधि की आशिंक

पुर्ति हेतु प्रस्तुत

लघु शोध प्रबंध

निर्देशक

डॉ. गिरधारी लाल शर्मा

(सहायक आचार्य)

शोधकर्त्री

सुमन यादव

(एम.एड. छात्रा)

शिक्षा विभाग

जैन विश्व भारती संस्थान

लाडनूं - 341306 (राजस्थान)

घोषणा – पत्र

मैं सुमन यादव शोधकर्त्री जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय लाडनूं यह घोषण करती हूँ कि मैंने अपना लघुशोध प्रबंध का कार्य जिसका शीर्षक **"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का स्मार्ट क्लास शिक्षण तथा परम्परागत कक्षा शिक्षण से शैक्षिक उपलब्धि पर पडने वाले प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन" डॉ. गिरधारी लाल शर्मा** की कुशल एवं प्रेरणास्पद मार्गदर्शन में पूर्ण किया।

दिनांक **शोधकर्त्री**

सुमन यादव

(एम.एड. छात्रा)

प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता हैं कि सुमन यादव (एम.एड. छात्रा) द्वारा **"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का स्मार्ट क्लास शिक्षण तथा परम्परागत कक्षा शिक्षण से शैक्षिक उपलब्धि पर पडने वाले प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन"** विषय पर लघु शोध प्रबंध का कार्य मेरे निर्देशन में सम्पन्न किया गया है।

निर्देशक

डॉ. गिरधारी लाल शर्मा

(सहायक आचार्य)

जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

आभार प्रसून

सर्वप्रथम मैं मां सरस्वती को नमन करती हूँ।

शिक्षकों का मेरे जीवन में योगदान अनमोल है, शब्दों से परे है।

इसके लिए मैं उनकी सदा आभारी रहूँगी,

जिन्होंने मेरे जीवन को दिशा देने में सहायता की है।

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध **"माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों का स्मार्ट क्लास शिक्षण तथा परम्परागत कक्षा शिक्षण से शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभावों का तुलनात्मक अध्ययन"** को विद्वतजनों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अति प्रसन्नता की अनुभूति हो रही हे। यह लघु शोध प्रबन्ध मेरा प्रथम प्रयास है, जिसे सौभाग्यवश इस प्रतिष्ठित महाविद्यालय के विद्वतजनों को आशीष व संरक्षण प्राप्त हुआ है। शोधार्थी ने एम.एड. आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत किया है। अतः उनके प्रति आभार प्रदर्शन करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ। आभार प्रदर्शन करते हुए मैं अपनी भावनाओं को शब्दों में व्यक्त करने में असमर्थ हूँ। फिर भी मैंने आभार प्रदर्शन करना मैं अपना कर्तव्य समझती हूँ। आभार प्रदर्शन करते हुए मैं अपनी भावनाओं को शब्दों में व्यक्त करने में असमर्थ हूँ।

फिर भी मैंने आभार व्यक्त करने का प्रयास किया है। इस शोध को प्रभावी और सफलतापूर्वक पूर्ण कराने का श्रेय मेरे **निर्देशक (सहायक आचार्य) डॉ. गिरधारी लाल शर्मा** को है, जिनका विद्वतापूर्ण मार्गदर्शन एवं सूक्ष्म पर्यवेक्षण में यह शोध प्रबन्ध पूर्ण हुआ है, इसके लिए मैं ऋणी रहूँगी। इन्होंने अपने व्यक्त जीवन के अमूल्य क्षणों में से इस कार्य को सम्पूर्ण कराने हेतु उन्होंने जिस निष्ठा के साथ

सहयोग किया है वह अविस्मरणीय है। मैं नतमस्तक हो इन्हें अपना हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ।

इस शोध प्रबन्ध को समय पर पूर्ण करने का श्रेय, **मेरे निर्देशक (सहायक आचार्य) डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन तथा समस्त गुरूजन डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. भावाग्राही प्रधान, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. आभा सिंह, डॉ. सरोज राय, डॉ. अमिता जैन, पुस्तकालयाध्यक्ष महिमा जैन (शिक्षा विभाग)** जैन विश्व भारती शिक्षण संस्थान लाडनू, जिला नागौर को जाता है, जिनके विद्वतापूर्ण मार्गदर्शन, स्नहे एवं सूक्ष्म पर्यवेक्षण में यह शोध प्रबन्ध पूर्ण हुआ है। इसके लिए मैं उनकी ऋणी रहूँगी। वस्तुतः शोध प्रबन्ध उनके निरन्तर पथ–प्रदर्शन एवं सक्रिय सहयोग का ही परिणाम है। मैं नतमस्तक हो उनका हार्दिक आभार प्रकट करती हूँ। प्रेरणापूर्ण प्रोत्साहन ने लघु शोध प्रबन्ध कार्य को सरल एवं सहज बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मैं उन लेखकों, विचारकों का भी हदय से कृतज्ञ हूँ जिनके समावेश इस लघु शोध कार्य में स्थान–स्थान पर किया गया है।

मैं अपने **सास–ससुर श्रीमती शिम्भु देवी, श्री रामनिवास यादव, माता–पिता श्रीमती ज्याना देवी, श्री भँवर लाल यादव, पति श्री भुपेन्द्र कुमार यादव, पुत्र–पुत्री कनिष्का, ऋषि, मित्र सरिता यादव, सपनेश गौतम, पिंकी, मनप्रित कौर** का सहृदय से आभार प्रकट करती हूँ, क्योंकि इनके सहयोग से ही मेरा यह शोध कार्य पूर्ण हो पाया है।

अंत में मैं **एन.के. फोटो कॉपियर्स** के **श्री पवन कुमार सैन** की भी आभारी हूँ जिनके अथक परिश्रम, अनुभव एवं सहयोग से ही यह लघु शोध प्रबंध कलात्मक

रूप से पूर्ण किया जाना संभव हो सका है। यदि इस लघु शोध प्रबंध की प्रस्तुति आकर्षक, सुन्दर एवं स्पष्ट एवं समय से देय बन पडी है, तो इनका श्रेय निःसंदेह एन.के. फोटो कॉपियर्स को दिया जाना चाहिए।

अंत में परम पिता परमात्मा को शत्–शत् नमन करती हूँ जिन्होंने मुझे इस योग्य बनाया कि मैं प्रस्तुत शोध का अध्ययन कर सकी।

स्थान–लाडनूं **प्रस्तुतकर्त्री**

दिनांक– **सुमन यादव**

(एम.एड. छात्रा)

अनुक्रमणिका

क्र.स.	विषयवस्तु	पृष्ठ संख्या
1.	**प्रथम अध्याय** **शोध परिचय**	**1-10**
1.1	प्रस्तावना	2-5
1.2	समस्या का औचित्य	5-6
1.3	समस्या से उभरने वाले प्रश्न	7
1.4	समस्या कथन	7
1.5	शोध के उद्देश्य	7
1.6	शोध की परिकल्पना	8
1.7	शोध समस्या में प्रयुक्त तकनीकि शब्दों की व्याख्या	8-9
1.8	अनुसंधान विधि	9
1.9	अध्ययन के चर	9
1.10	न्यादर्श	10
1.11	शोध की सांख्यिकी	10
1.12	शोध परिसीमन	10
2.	**अध्याय – द्वितीय** **सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन**	**11-27**
2.1	प्रस्तावना	12-13
2.2	सम्बन्धित साहित्य का अर्थ एवं परिभाषा	13-14
2.3	सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के उद्देश्य	14-15
2.4	सम्बन्धित साहित्य के लाभ	15-16
2.5	सम्बन्धित साहित्य की सीमाएं	16
2.6	शोध समस्या से सम्बन्धित भारत में हुए अध्ययन	17-22
2.7	शोध समस्या से सम्बन्धित विदेशों में हुए अध्ययन	22-26
	सारांश	27
3.	**अध्याय – तृतीय** **शोध विधि, न्यादर्श एवं उपकरण**	**28-39**
3.1	प्रस्तावना	29
3.2	अध्ययन में प्रयुक्त विधि	29-30
3.3	प्रयोगात्मक विधि	30-32
3.4	उपकरण	33

3.5	जनसंख्या	34
3.6	न्यादर्श	34-36
3.7	चर	37
3.8	शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी	37-38
3.9	सारांश	39
4.	**चतुर्थ अध्याय** **प्रदत्तों का वर्गीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या**	**40-51**
4.1	प्रस्तावना	41
4.2	प्रदत्तों का सारणीयन	41
4.3	प्रदत्तों का वर्गीकरण	42
4.4	प्रदत्तों का विश्लेषण व व्याख्या	42-51
4.5	सारांश	51
5.	**पंचम अध्याय** **शोध सारांश एवं निष्कर्ष**	**52-59**
5.1	प्रस्तावना	53-55
5.2	समस्या का औचित्य	55
5.3	समस्या कथन	55
5.4	अध्ययन के उद्देश्य	55-56
5.5	शोध की परिकल्पना	56
5.6	शोध निष्कर्ष	56-57
5.7	शैक्षिक निहितार्थ	57-58
5.8	आगामी अध्ययन हेतु सुझाव	58-59
5.9	उपसंहार	59
	संदर्भ ग्रन्थ सूची	**60-66**
	परिशिष्ठ	**67-71**